सम्प्रदान कारक-चतुर्थी

कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्

दान के कर्म द्वारा कर्त्ता जिसे सन्तुष्ट करना चाहता है, वह पदार्थ सम्प्रदान कहलाता है।

चतुर्थी सम्प्रदाने

सम्प्रदान में चतुर्थी होती है, यथा-ब्राह्मणाय गां ददाति (ब्राह्मण को गाय देता है) ।

यहाँ गोदानकर्म द्वारा ब्राह्मण को सन्तुष्ट करना ही ब्राह्मण को इष्ट है।

सम्प्रदान का अर्थ है "अच्छा दान', अर्थात् जिसमें दी हुई वस्तु सर्वथा दी जाती है और दान कर्ता के पास वापस नहीं पाती।

स रजकस्य वस्त्रं ददाति (वह धोबी को कपड़ा देता है)।

इसमें कर्ता धोबी को कपड़ा सर्वथा नहीं देता, पुनः वापस ले लेता है, अतः रजकस्य में चतुर्थी का प्रयोग नहीं हुआ।

क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् वा०

न केवल दान कर्म द्वारा अपितु किसी विशेष क्रिया द्वारा जो इष्ट (अभिप्रेत) हो वह भी संप्रदान कहलाएगा, जैसे- पत्ये शेते। यहाँ पति को अनुकूल बनाने की क्रिया का इष्ट पति ही है, अतः पति संप्रदान हुआ।

अशिष्टव्यवहारे दाण: प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया वा०

अशिष्ट व्यवहार में दान का पात्र संप्रदान नहीं होगा, उसमें चतुर्थी अर्थ होने पर भी तृतीया होगी। जैसे- दास्या संयच्छते कामुक: - यहाँ अशिष्ट व्यवहार है अतः दासी में तृतीया का प्रयोग हुआ किन्तु पत्नी के अर्थ में चतुर्थी का प्रयोग होगा- भार्यायै संयच्छति।

तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या वा

1. जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे- भक्त: मुक्तये हरिं भजति। बाल: दुग्धाय क्रन्दति। त्वं धनाय प्रयतसे।
2. जब कोई काम किसी दूसरे फल की प्राप्ति के लिए किया जाता है तब उस फल में चतुर्थी का प्रयोग होता है। जैसे- भक्ति: ज्ञानाय जायते (सम्पद्यते/कल्पते)।
3. जिस वस्तु को बनाने के लिए किसी दूसरी वस्तु का अस्तित्त्व रहता है तो उसमें चतुर्थी का प्रयोग होता है। जैसे- आभूषणाय सुवर्णम्। शकटाय दारु।

उत्पातेन ज्ञापिते च वा॰

कोई उत्पात किसी आशिभ घटना का सूचक हो तो उसमें चतुर्थी होती है। जैसे- कपिला विद्युत् वाताय (लाल विद्युत आँधी की सूचक है)

हितयोगे च वा॰

हित तथा सुख के साथ भी चतुर्थी होती है, यथा – ब्राह्मणाय हितं सुखं वा भवेत् ।

गत्यर्थकमणि द्वितीया चतुर्थौ चेष्टायामध्वनि

गत्यर्थक धातु के साथ यदि चेष्टा हो तो द्वितीया और चतुर्थी होती है,

यथा-ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति ।

चेष्टा न होने पर- मनसा हरिं भजति । मार्ग कर्म होने पर- पन्थानं गच्छति ।